वैज्ञानिक चेतना का करें विकास

नवनीत कुमार गुप्ता

महान भारतीय वैज्ञानिक सर सी.वी.रमन ने 28 फरवरी 1928 को रमन प्रभाव की खोज की थी इसलिए उनके इस योगदान की स्मृति में 1987 से प्रत्येक साल 28 फरवरी को भारतीय विज्ञान दिवस मनाया जाता है। इसी खोज के कारण सर सी.वी.रमन को बाद में विश्व के सर्वोच्च वैज्ञानिक सम्मान नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

ऐसे महान वैज्ञानिकों से भावी पीढ़ी प्रेरित होकर देश को विज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी स्थान दिलाए इसी मंशा से हर साल विज्ञान दिवस के अवसर पर पूरे देश में अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। हर वर्ष ये कार्यक्रम एक थीम विषय पर क्रेंदित होते हैं ताकि इनके माध्यम से पूरे देश में वैज्ञानिक चेतना के प्रसार का प्रयास किया जा सके। इस साल की थीम 'स्वच्छ ऊर्जा विकल्प एवं नाभिकीय सुरक्षा' है। इसे लेकर पूरे देश के विद्यालयों, विज्ञान केंद्रों एवं विज्ञान संग्रहालयों आदि में व्याख्यान, परिचर्चाएं, क्विज़ एवं पेंटिंग जैसे कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

हालांकि आम जनता के लिए तो यह युग विज्ञान का युग है जिसमें विज्ञान के तमाम उपकरण हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन चुके हैं और हम विज्ञान की खोजों तथा आविष्कारों का भरपूर लाभ उठा रहे हैं मगर फिर भी हमारे समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग आज भी निराधार धारणाओं और अंधविश्वासों से घिरा हुआ है। इनमें अशिक्षित और पढ़े-लिखे दोनों ही प्रकार के लोग शामिल हैं। ये लोग झाड़-फूंक, जादू-टोना-टोटकों से लेकर तरह-तरह के भ्रमों पर विश्वास करते हैं जिसके कारण वे वैज्ञानिक चेतना से दूर हैं।

अनेक टी.वी. चैनल भी सामान्य प्राकृतिक घटनाओं की ज्योतिषियों से अवैज्ञानिक व्याख्याएं प्रस्तुत करवाकर अंधविश्वास फैलाने में योगदान दे रहे हैं। इसका ताज़ा उदाहरण पिछले साल 15 जून को सामने आया। इस दिन चंद्र ग्रहण हुआ था जो सदी का सबसे लंबा चंद्रग्रहण था। यह एक यादगार और अद्भुत आकाशीय घटना थी। लेकिन, अनेक टी. वी. चैनलों ने सूर्य, चंद्रमा और पृथ्वी की इस विशेष स्थिति को समझाने की बजाय अंधविश्वासों को ही तरजीह दी।

देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू समाज की उन्नति में वैज्ञानिक मिज़ाज को आवश्यक मानते थे। उन्होंने 1958 में संसद में भारत की 'विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति' प्रस्तुत की थी। किसी देश की संसद द्वारा विज्ञान नीति का प्रस्ताव पारित करने का यह विश्व में पहला उदाहरण था। नेहरू का विचार था कि वैज्ञानिकों को चाहिए कि वे प्रयोगशालाओं को मात्र वैज्ञानिक अनुसंधान का केंद्र न मानें, बल्कि उनका लक्ष्य यह हो कि जन मानस में वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न हो। ऐसा दृष्टिकोण ही उन्नति की रीढ़ है। प्रकृति के रहस्यों का ज्ञान न होने के कारण अंधविश्वासों का जन्म होता है। विज्ञान प्रकृति के इन रहस्यों का पता लगाता है और रहस्य का पता लग जाने पर उससे जुड़ा भ्रम या अंधविश्वास खत्म हो जाना चाहिए। लेकिन, कई बार वैज्ञानिक प्रवृत्ति या वैज्ञानिक सोच की कमी के कारण ऐसा नहीं होता।

हमारे समाज में कई रीति-रिवाज़ आज भी केवल परंपरा के नाम पर चल रहे हैं। चूंकि वे पहले से चले आ रहे हैं, इसलिए कई लोग अभी भी उन रीति-रिवाजों को मान रहे हैं, जो आज तर्क की कसौटी पर खरे नहीं उतरते। इसलिए हमें ऐसी मिथ्या मान्यताओं को नहीं मानना चाहिए। इन्हीं मिथ्या मान्यताओं और अंधविश्वासों का परिणाम है कि हमारे ही देश के कुछ राज्यों में हर साल सैकड़ों महिलाएं 'डायन' बताकर मार दी जाती हैं। कई तांत्रिक आज भी अबोध बच्चों की बलि दे रहे हैं। तमाम लोग आज भी अज्ञानवश बीमारी का इलाज झाड़-फूंक और गंडे-ताबीजों से करवाते हैं। बीमारियां पैदा करने वाले बैक्टीरिया, वायरस, फफूंद वगैरह झाड़-फूंक को नहीं पहचानते। यह समझना

चाहिए कि बीमारी का इलाज केवल औषधियों से हो सकता है जो रोगाणुओं को नष्ट करती हैं। अंधविश्वास के कारण हर साल बड़ी संख्या में मरीज़ जान से हाथ धो बैठते हैं।

बेज़ुबान पशुओं की बलि देकर भी किसी व्यक्ति की बीमारी का इलाज नहीं हो सकता। हमें यह भी समझना चाहिए कि जन्मपत्री मिला कर अगर विवाह सफल होता तो आपसी कलह का शिकार होकर इतने जोड़े तलाक न लेते। वास्तु शास्त्र और फेंगशुई का भी कोई तार्किक या वैज्ञानिक आधार नहीं है।

समाज में आए दिन किस्मत बदल देने, गड़ा धन दिलाने, सोना-चांदी दुगना कर देने वाले ढोंगी बाबा लोगों को ठग रहे हैं। इसका कारण भी वैज्ञानिक प्रवृत्ति की कमी ही है। यदि तार्किक ढंग से सोचा जाए तो समाज में ऐसी घटनाएं नहीं होंगी।

समाज में वैज्ञानिक प्रवृत्ति को बढ़ावा देने के लिए ज़रूरी यह है कि हम वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाएं। किसी भी घटना या परिघटना के रहस्य को वैज्ञानिक दृष्टि से समझने का प्रयास करें, उसके बाद ही उस पर विश्वास करें। तभी समाज में वैज्ञानिक चेतना आएगी और समाज आगे बढ़ेगा। शायद तब जो समाज बनेगा उसका सपना ही सर सी.वी. रमन जैसे वैज्ञानिकों ने देखा होगा जिनकी स्मृति में हर साल विज्ञान दिवस मनाते हैं। इसलिए हम सभी को वैज्ञानिक चेतना को अपनाते हुए उन्नत समाज की रचना के लिए प्रयास करना चाहिए। ***(स्रोत फीचर्स)***